# सिंगरौली जिले के आर्थिक विकास में वनोपज का योगदान

**सुचेता सिंह**
शोधार्थी, अर्थशास्त्र
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.)

आर्थिक विकास की समृद्धि की अवधारणा में आय के वितरण तथा उसके उपयोग पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है। इसमें न्यायोचित वितरण अर्थात् साम्यता का समावेस किया जा सके तो उस अवधारणा को आर्थिक विकास कहा जा सकता है। इसलिए आर्थिक विकास कल्याण का बेहतर माप है। क्योंकि इसमें अर्थव्यवस्था के सभी वर्गों का ध्यान रखा जाता है। अतः आर्थिक समृद्धि में उसके गुणात्मक पक्ष का भी ध्यान रखा जा सके तो इसे आर्थिक विकास कहा जा सकता है।

बीसवीं शताब्दी में उपनिवेशवादी व्यवस्था से स्वतन्त्र हुए राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था पूर्णतः जर्जर थी। इन स्वतंत्र हुए राष्ट्रो की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक विपन्नता, निरक्षरता, बेरोजगारी एवं विकास की थी। औपनिवेशिक स्वतंत्रता के ६-७ दशकों ने यह तो प्रमाणित किया कि लोकतांत्रिक व्यवस्था एक श्रेष्ठतम् व्यवस्था है। इसके साथ ही इन राष्ट्रों में लोकतन्त्र का लोक कल्याणकारी प्रारूप मानव विकास की दृष्टि से श्रेष्ठतम प्रारूप था। अल्प विकसित और अविकसित राष्ट्रों का मुख्य फोकस ग्रामीण विकास तथा मानवीय संसाधन को विकास की मुख्य धारा से जोड़ना रहा है। स्वतंत्र भारत में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया के साथ-साथ ग्रामीण विकास की प्रक्रिया को विशेष गति मिली। १९५२ में प्रारम्भ की गयी योजना सामुदायिक विकास कार्यक्रम तथा योजना आयोग द्वारा समग्र राष्ट्रीय विकास सम्बन्धित योजनाएँ, परियोजनाएँ तथा विकास कार्यक्रमों का क्रियान्वयन प्रारम्भ हुआ। पंचवर्षीय योजनाओं ने कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, उर्जा, गरीबी उन्मूलन, ग्राम विकास, सामाजिक कल्याण तथा विकास से सम्बन्धित लगभग समस्त क्षेत्रों को विकास की प्रक्रिया से जोड़े जाने का प्रयास शुरू किया। स्वतंत्र भारत का एक प्रमुख नारा-**"सबको रोटी सबको काम"** स्वाधीन भारत की लगभग सभी सरकारों द्वारा बुलन्द किया गया है और ये नारे एवं शासन के प्रयास निष्फल नहीं रहे। इनका सकारात्मक प्रभाव सामाजिक व्यवस्था पर पड़ा किन्तु जनसंख्या विस्फोट के दबाव, संकुचित होते हुए सार्वजनिक क्षेत्र, रोजगार सृजन के प्रयासों को अपेक्षित गति नहीं दे सके। फलतः ६-७ दशक बाद भी **'सबको रोटी सबको काम'** का स्वप्न पूर्णतः साकार नहीं हो सका है। समस्त प्रकार की शासन व्यवस्थाओं तथा प्रशासनिक प्रणालियों में मानव विकास को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया जाता है। आधुनिक लोक कल्याणकारी राज्यों का दर्शन, चिंतन तथा प्रयास पूर्णतः मानव संसाधन विकास को समर्पित हैं। क्योंकि मनुष्य के सर्वांगीण विकास के बिना राज्य के विकास या सरकार के अस्तित्व की कल्पना व्यर्थ है।

भारतीय संदर्भ में ग्रामीण विकास का अध्ययन एक स्वाभाविक एवं रूचिकर प्रवृत्ति है। भारतीय नियोजन प्रक्रिया में ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। इस दिशा में १९५० के दशक के आरम्भ में सामुदायिक विकास कार्यक्रम आरम्भ करके एक अच्छी शुरूआत की गई इस कार्यक्रम में आधारभूत स्तर पर जो बुनियादी सेवाओं को विस्तार एवं विकासगत सेवाओं का जाल स्थापित किया गया जो गाँवों में चेतना सृजित करके एक ग्रामीण समुदाय के संभाव्य मॉडल को विकसित करने का माध्यम सिद्ध हुआ बाद में आगामी पंचवर्षीय योजना में त्वरित गति से होने वाले विनियोग से दूरदराज के गाँवों में तीव्र गति से सामाजिकार्थिक परिवर्तन लाने के लिए आवश्यक भौतिक एवं संस्थागत आधार संरचना का निर्माण हुआ। बाद में जब यह महसूस हुआ कि विभिन्न विकासगत कार्यक्रमों का लाभ उन लोगों द्वारा ही प्राप्त किया गया जिनके पास भूमि-संसाधन अधिक मात्रा में थी, तो १९७० के दशक

में लघु सीमान्त तथा भूमिहीन श्रमिकों के लिए विशेष तौर पर कार्यक्रम बनाए गए।

भारत एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला विकासशील देश है। भारत की कुल जनसंख्या का लगभग ७० प्रतिशत भाग प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। कृषि की मानसून पर निर्भरता एवं उसका उन्नत स्वरूप का न होना आय एवं रोजगार की समस्या उत्पन्न करता है। कृषि भूमि के असमान वितरण से आय में असमानताएँ बढ़ी हैं। इस प्रकार वर्तमान भारत के आर्थिक विकास में गरीबी एक मुख्य अवरोध है। यह गरीबी अशिक्षा, जनसंख्या वृद्धि, कुपोषण का कारण बनकर विकास के दुष्चक्र को परिभाषित करती है। गरीबी कालांतर में संचयी प्रभाव के कारण और अधिक घातक हो जाती है।

**सिंगरौली जिले में वनों का विकास-**

वन अर्थात फॉरेस्ट शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के **फेटिश** शब्द से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है बाहरी अर्थात गाँव की बाहरी सीमा में लगे हुये स्थान से है। जिसमें बसी हुई भूमि अतः राजस्व भूमि सम्मिलित न हो अर्थात वन से हमारा अभिप्राय ऐसी भूमि व क्षेत्र से है। जहाँ फसल नहीं बोई जाती है और इसका प्रबंधन और संरक्षण वन विभाग के द्वारा किया जाता है। **"एक उगता हुआ वृक्ष राष्ट्र की प्रगति का जीवन प्रतीक होता है। एक वृक्ष को काट डालना आसान है, परन्तु उसे उगाने में एक पीढ़ी गुजर जाती है।"** वन वास्तव में प्रकृति के द्वारा दिया गया एक निःशुल्क उपहार है, क्योंकि भौतिक संरचना, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य प्राणी के भौतिक विन्यास जैसे-स्थिति, आकार, संरचना और उच्चावच जलवायु की दशाओं ने हमारी मानस के मूल लक्षणों को प्रभावित किया है और इस प्रकार अनुकूल पर्यावरण में ही जीवन का विकास होता है और अनुकूल पर्यावरण का आधार वन को ही माना गया है क्योंकि मनुष्य एवं वनों का सम्बन्ध काफी प्राचीन काल से रहा है तथा इन्हीं को मानवीय सभ्यता तथा आर्थिक विकास का आधार माना जाता है। प्राचीनकाल में जब मनुष्य आदिम अवस्था में था, तब पृथ्वी का अधिकांश भाग वनों से आच्छादित था, परन्तु जैसे-जैसे मनुष्य की आवश्यकतायें बढ़ती गई, जनसंख्या बढ़ती गई, मनुष्य सभ्य होता गया, गाँवों एवं शहरों का निर्माण हुआ तथा यातायात के साधनों का विकास हुआ, इन उद्देश्य की प्राप्ति के लिये वृक्षों की कटाई का कार्य प्रारम्भ होने लगा, जिससे धीरे-धीरे वनों का ह्रास प्रारंभ हो गया और मनुष्य यह भूल गया कि-**"वन ही जीवन है।"**

सिंगरौली जिले में वनों से प्राप्त होने वाले वनोत्पाद के रख-रखाव और सुरक्षा के लिए व्यापक स्तर पर प्रबंध किए जाते हैं। वृक्षों के वृद्धि, उजड़े वनों के रोपण, सघन वन क्षेत्र में पहुँचने के लिए मार्ग निर्माण, दूषित वनों की कटाई, वन सुरक्षा व्यवस्थापन आदि विभिन्न कार्य ऐसे हैं जिनकी प्रतिमूर्ति के लिए विभिन्न मुकामों में व्यय किया जाता है। वन क्षेत्र को आकर्षक बनाने के लिए उद्यानों के रूप में उनका विकास, क्षेत्र विशेष का चयन कर वहाँ विलुप्त होते वन पशु-पक्षियों और पेड़ पौधों का संवर्धन करना आदि के लिए उत्थानात्मक कार्य योजनाओं को तैयार कर कार्य रूप में परिणित करने के लिए धनराशि की जरूरत पड़ती है। वनों से संबंधित विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन में किया गया खर्च किए गए वनों का आंकलन वन क्षेत्र में भौगोलिक वर्गीकरण के आधार पर किया जा सकता है। सिंगरौली जिले के वन क्षेत्र के रख-रखाव और संवर्धन के लिए किए जाने वाले व्यय का विस्तृत विवरण वनमंडल द्वारा तैयार की गयी कार्य योजना पुस्तिका में उपलब्ध है, कार्य योजना पुस्तिका जिसका प्रारूप वन विभाग के वरिष्ठ और अनुभवी अधिकारियों कर्मचारियों के द्वारा तैयार किया जाता है, में विभिन्न महत्वपूर्ण बिन्दुओं को चिन्हित कर उनमें किया गया खर्च का विवरण सन्निहित किया जाता है।

**सिंगरौली जिले में वनों का योजनाबद्ध विकास-**

राष्ट्रीय वन नीति १८५२ के आधार पर सरकार ने पंचवर्षीय योजनाओं के अर्न्तगत विकास के लिए कार्यक्रम तैयार किये बल्कि पंचवर्षीय योजनाओं में वनों के विकास के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए गये हैं। १९५० में अधिक वृक्ष लगाओं कार्यक्रम प्रारंभ किया गया जिसे **'वन महोत्सव'** का नाम दिया गया। वह कार्यक्रम प्रतिवर्ष १ जुलाई से ७ जुलाई तक पूरे देश में मनाया जाता है वनों के सन्दर्भ में शिक्षा और अनुसंधान कार्य के लिए देहरादून में 'वन अनुसंधान संस्थान' स्थापित किया गया। यह संस्थान वन विभाग के कर्मचारियों और अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था भी करता है। नवम्बर, १९७८ में घोषित नवीन वन नीति में पर्यावरण संरक्षण, वन क्षेत्र में वृद्धि तथा

नहरों सड़कों और रेलमार्ग के किनारे वृक्ष लगाने पर विशेष बल दिया गया है। वन भूमि को अन्य प्रयोगों में प्रयुक्त करने से रोकने के लिए वन संरक्षण अधिनियम १९८० लागू किया गया। सामाजिक बानिकी के माध्यम से समाज में व्यर्थ पड़ी भूमियों, बंजर जमीनों में वृक्षारोपण का कार्य किया जा कर वृक्ष खेती को अत्यन्त महत्व दिया जा रहा है।

सिंगरौली जिले के वन आधारित उद्योग राज्य सरकार एवं वन उपज भोपाल से प्राप्त होने वाली राशि से वन उपज का संग्रहण समितियों के माध्यम से कराया जाता है। इस कार्य के लिये समितियों को कमीशन राशि दी जाती है। जैसे तेंदूपत्ता संग्रहण किये जाने पर समितियों को १५.०० रूपया प्रति हजार तेदूपत्ता गड्डी के मान से कमीशन का भुगतान किया जाता है। वन उपज का विक्रय शासन द्वारा किया जाता है। विक्रय उपरान्त प्राप्त लाभांश राशि का ६० प्रतिशत बोनस के रूप में समितियों को प्राप्त होती हैं जो अपने सदस्यों को वितरित करती हैं। केन्द्र शासन से गोदामों के निर्माण हेतु अनुदान प्राप्त राशि से गोदामों का निर्माण समिति द्वारा कराया जाता हैं। निर्मित गोदामों में तेदूपत्ता का भण्डारण होने पर समितियों को गोदाम किराया २१.०० प्रति वास्तविक बोरा प्रति माह प्राप्त होता है। वन उपज के सग्रहण हेतु समितियों को मिलने वाली कमीशनन राशि १५.०० प्रति बोरा से ही समिति अपने सम्पूर्ण प्रशासनिक व्यय वाहन करती है। इस प्रकार से वन आधारित उद्योग से प्रमुख आय उपरोक्त ही है और इस कमीशन राशि से ही वन विभाग को आय प्राप्त होती है।

वन आधारित उद्योग क्षेत्र में केन्द्र सरकार सीधे कोई भी अनुदान नही भेजती है, न ही इसकी कोई सहायता प्राप्त होती है। इसके लिए मध्य प्रदेश सरकार जब वन विभाग के योजनाओं एव विकास सम्बधी प्रोजेक्ट को बनाकर भेजती है एवं उन प्रोजेक्ट में पूरा वन विभाग के द्वारा जो योजना के नये प्रस्ताव, बनाकर केन्द्र सरकार को भेजा जाता है तब कहीं केन्द्र सरकार वन विभाग अर्थात उनके द्वारा बनाई गई योजनाओं पर बजट भेजती है। इस प्रकार से वन विभाग को केन्द्र सरकार से अनुदान प्राप्त होता है। इसी प्रकार से राज्य सरकार भी उसी बजट को मध्य प्रदेश के अन्य जिलों में विकास के लिए राशि भेजती है। वन विभाग को पूरी वित्त व्यवस्था एवं अनुदान एवं अन्य सहायता राज्य व केन्द्र सरकार देती हैं। उसी राशि से वन विभाग विकास कार्य करती हैं।

**संदर्भ-**

१. दीक्षित जी.आर.- जुलाई-सि. १९९१ - ८, मानवीय पूँजी के विकास की गति की खोज तथा परातत्वी खोज में स्थानीय वनस्पतियों का योगदान्- "वानिकी संदेश" राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर-१९९१
२ पुरोहित डॉ. ममता १९९६-१९, कुरंज (लघुवनोपज) के असामान्य पौधों का अध्ययन्-"वानिकी संदेश" राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर-१९९६-गग. (२) पेज नं. १९ से २२. बोहरा एन.के. १९९६-२०. नीम आधुनिक परिप्रेक्ष में-"वानिकी संदेश" राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर
३ मार्डीकर पी.एस.-१९९४-२१, ईसवगोल (लघुवनोपज) का अध्ययन- "वानिकी संदेश" राज्य वन् अनुसंधान संस्थान् जबलपुर- १९९४
४ तिर्की-किरणज्योति १९९८- २२, "म.प्र. वानिकी नीति एवं जनजाति का विकास" १९९८
५ जगनाराण-नवम्बर- २००६-२३, औषधीय एवं पोषक तत्वों का भण्डार-मशरूम "योजना" योजना भवन नयी दिल्ली-वर्ष- २००६, अंक ८
६ प्रकाश गर्ग- २००२, "वन आधारित उद्योगों का विकास और संभावनाएं" म.प्र. के विशेष संदर्भ में" सामाजिक सहयोग राष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका, २००२
७ तिवारी- डॉ. डी.एन. "वनों का मनमोहक संसार", भारतीय अनुसंधान परिषद-१९९१
८ उपाध्याय, प्रो. विजय शंकर एवं पाण्डेय डॉ. गया "जनजाति जंगल" जनजाति विकास म.प्र. हिन्दी ग्रंथ आकादमी-२००२
९ इंदुरकर डॉ. पी.-"फारेस्ट्री इनवायरमेंट एण्ड इकोनॉमिक्स डवलपमेंट" आशीष पब्लिशिंग हाउस १९९२.